❍ 30 / 06 / 22 की मुरली से चार्ट ❍

⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *बाप से की गयी प्रतिज्ञा पर अटल रहे ?*

➢➢ *भोजन बहुत शुद्धी से दृष्टि देकर स्वीकार किया ?*

➢➢ *सर्व खजानों के अधिकारी बन स्वयं को भरपूर अनुभव किया ?*

➢➢ *स्थिति को अचल अडोल बनाया ?*

———————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *समय प्रमाण अब चारों ओर सकाश देने का, वायब्रेशन देने का, मन्सा द्वारा वायुमण्डल बनाने का कार्य करना है।* अब इसी सेवा की आवश्यकता है क्योंकि समय बहुत नाजुक आना है।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न

दिया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪
⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं कल्प पहले वाली बाप के साथ पार्ट बजाने वाली विशेष आत्मा हूँ"*

〰✧ बाप में निश्चय है कि वही कल्प पहले वाला बाप फिर से आकर मिला है। ऐसे ही अपने में भी इतना निश्चय है कि हम भी वही कल्प पहले वाले बाप के साथ पार्ट बजाने वाली विशेष आत्माएं हैं? या बाप में निश्चय ज्यादा है, अपने में कम है? अच्छा, ड्रामा में जो भी होता है उसमें भी पक्का निश्चय है? *जो ड्रामा में होता है वह कल्याणकारी युग के कारण सब कल्याणकारी है। या कुछ अकल्याण भी हो जाता है? कोई मरता है तो उसमें कल्याण है? वो मर रहा है और आप कल्याण कहेंगे, कल्याण है? बिजनेस में नुकसान हो गया-यह कल्याण हुआ? तो नुकसान भी कल्याणकारी है!*

〰✧ ज्ञान के पहले जो बातें कभी आपके पास नहीं आई, ज्ञान के बाद आई-तो उसमें कल्याण है? माया नीचे-ऊपर कर रही है, कल्याण है? इसमें क्या कल्याण है? माया आपको अनुभवी बनाती है। *अच्छा, तो ड्रामा में भी इतना ही अटल निश्चय हो। चाहे देखने में अच्छी बात न भी हो लेकिन उसमें भी गुप्त अच्छाई क्या भरी हुई है, वो परखना चाहिए।* जैसे कई चीजें होती हैं, उनका बाहर से कवर (ढक्कन) अच्छा नहीं होता है लेकिन अन्दर बहुत अच्छी चीज होती है। बाहर से देखेंगे तो लगेगा-पता नहीं क्या है? लेकिन पहचान कर उसे खोलकर अन्दर देखेंगे तो बढ़िया चीज निकल आयेगी।

〰✧ *तो ड्रामा की हर बात को परखने की बुद्धि चाहिए। निश्चय की पहचान ऐसे समय पर आती है। परिस्थिति सामने आवे और परिस्थिति के

समय निश्चय की स्थिति, तब कहेंगे निश्चय बुद्धि विजयी। तो तीनों में पक्का निश्चय चाहिए-बाप में, अपने आप में और ड्रामा में।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *आज बापदादा सर्व स्नेही बच्चों का खेल देख रहे थे।* क्या खेल होगा? खेल देखना तो आपको भी अच्छा लगता है। क्या देखा? अमृतवेले का समय था।

〰✧ *हरेक आत्मा, जो पक्षी समान उडने वाली है अथवा रॉकेट की गति से भी तेज उडने वाली है, आवाज की गति से भी तेज जाने वाली है,* सब अपने-अपने साकार स्थानों पर, जैसे प्लेन एरोड्रोम पर आ जाता है वैसे सब अपने रूहानी एरोड्रोम पर पहुँच गये।

〰✧ लक्ष्य और डायरेक्शन सबका एक ही था। *लक्ष्य था उडकर बाप समान बनने का और डायरेक्शन था एक सेकण्ड में उडने का।* क्या हुआ?

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂
☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆
✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *वायुमण्डल को पॉवरफुल बनाने का साधन क्या है? अपने अव्यक्त स्वरूप की साधना है। यही साधन है।* इसका बार-बार अटेन्शन रहे। जिस बात की साधना की जाती है, उसी बात का ध्यान रहता है ना। *अगर एक टाँग पर खड़े होने की साधना है तो बार-बार यही अटेन्शन रहेगा। तो यह साधना अर्थात बार-बार अटेन्शन की तपस्या चाहिए। चेक करो कि मैं अव्यक्त फ़रिश्ता हूँ? अगर स्वयं नहीं होंगे तो दूसरों को कैसे बना सकेंगे?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बाप से जो प्रतिज्ञा की है उस पर पूरा पूरा चलना"*

❇ *प्यारे बाबा :-* "मेरे मीठे फूल बच्चे... ईश्वर पिता से किया वादा दिल जान से पूरा करो... *जिस पवित्रता के खुबसूरत रंग में अब रंगे हो, उससे बदरंग न बनो.*.. शिव पिता को दी हुई प्रतिज्ञा को कभी न तोड़ो... पवित्रता ही सबसे ऊँची मंजिल है... इतने ऊँचे शिखर पर पहुंच अपना रजिस्टर पुनः खराब न करो..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा :-* "हाँ मेरे प्यारे बाबा... मैं आत्मा आपकी छत्रछाया में विकारो की कालिमा से निकल कर पवित्र हो रही हूँ... प्यारे बाबा आपने मुझे विकारो की दासता से मुक्त कराकर... मेरा जीवन कितना धवल और प्यारा कर दिया है... *मै आत्मा पवित्रता की प्रतिज्ञा से गौरवशाली हो गयी हूँ.*.."

❇ *मीठे बाबा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... ईश्वर पिता के सुखदायी हाथो को पकड़कर जो विकारो के गन्दे नाले से जो बाहर निकल गए हो... पुनः उस विकारो की गन्दगी की ओर आकर्षित न हो... सुकर्मो से अपना रजिस्टर खुबसूरत बनाओ... *पवित्रता की खूबसूरती से सजधज कर देवताई सुखो के मालिक बनो.*.. दिल से वफादारी का सच्चा वादा निभाओ..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा :-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... मै आत्मा आपकी प्यारी सी यादो में देह के मटमैले आकर्षण से निकल कर... आत्मिक नशे से भर गयी हूँ... *हर पल आत्मा भाई भाई के भाव से ओतप्रोत हो रही हूँ.*.. पवित्र मन बुद्धि से देवताई सुखो की हकदार हो रही हूँ..."

❇ *प्यारे बाबा :-* "मेरे सिकीलधे मीठे बच्चे... देवताई सौंदर्य का, स्वर्ग के मीठे सुखो का आधार ही पवित्रता है... ईश्वर पिता से की हुई प्रतिज्ञा को हर पल हर साँस याद रखो... देह के, विकारो के चंगुल में फिर न फंसो... *ईश्वरीय यादो में पवित्रता के रंग में रंगकर, सदा के खुबसूरत हो जाओ.*.. दिव्यता से सजधज कर सतयुगी सुखो में मुस्कराओ..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा :-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... मै आत्मा *ईश्वरीय राहो पर चल कितनी पवित्र कितनी निर्मल और कितनी ओजस्वी हो गयी हूँ..*. प्यारे बाबा आपसे जो प्रतिज्ञा की है उस प्रतिज्ञा को अंतिम साँस तक निभाऊंगी...

सुकर्मो की राहो में असीम खुशियो के फूल खिलाऊँगी... ऐसी वफादार प्रतिज्ञाबद्ध मै आत्मा हो गई हूँ..."

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- भोजन बहुत शुद्धि से दृष्टि देकर स्वीकार करना है*"

➳ _ ➳ शास्त्रों में ब्रह्मा भोजन की कितनी महिमा की गई है! कितना सच कहा गया है कि देवता भी इस ब्रह्मा भोजन को तरसते थे! भले सतयुग में देवताओं का राज्य होगा,अपरम अपार सुख होंगे, शांति और सम्पन्नता होगी। भोजन भी 56 प्रकार का होगा किन्तु अपने हाथ से और साथ बैठ कर खाने वाला भगवान कहाँ होगा! *जिस परमात्म पालना में पलते हुए, अपने पिता परमात्मा के साथ बड़े प्यार के साथ भोजन स्वीकार करने का जो आनन्द मैं अब ले रही हूँ वो आनन्द पूरे कल्प में फिर कहाँ मिलेगा*! बड़े प्यार के साथ बाबा का आह्वान कर, भोजन बनाना और फिर बाबा के साथ बैठ कर भोजन खाने का आनन्द लेना! कितना सुख समाया है इसमें जिसका वर्णन भी नही हो सकता।

➳ _ ➳ मन ही मन अपने आप से बातें करती मैं रसोईघर, अपने प्यारे बाबा के भण्डारे की ओर चल पड़ती हूँ। अपने परम पवित्र श्रेष्ठ स्वमान की सीट पर सेट होकर मैं बाबा के इस भण्डार गृह में प्रवेश करती हूँ, उसकी सफाई करती हूँ और बड़े प्यार से बाबा का आह्वान करती हूँ। *मेरा आह्वान सुनते ही मैं महसूस करती हूँ जैसे बाबा अपना घर परमधाम छोड़ कर नीचे उतर आयें है और इस भण्डारगृह में आकर मेरे सिर के ठीक ऊपर स्थित हो गए हैं*। उनकी सर्वशक्तियों की किरणों रूपी छत्रछाया के नीचे मैं स्वयं को अनुभव कर रही हूँ। उनकी याद में मग्न, उनकी सर्वशक्तियों को स्वयं में भरते हुए मैं बड़ी शुद्धि से भोजन बना रही हूँ और महसूस कर रही हूँ कि परमात्म शक्तियों से यह भोजन कितना शदध और पवित्र बन रहा है।

➳ _ ➳ अपने प्यारे बाबा की याद में, उच्च स्वमान के साथ बड़ी शुद्धि से भोजन बनाकर अब मैं बड़े प्यार के साथ भोग की थाली तैयार करती हूँ। *आसन बिछा कर, भोग की थाली को सामने रख मैं अशरीरी स्थिति में स्थित होकर अपने लाइट के फ़रिश्ता स्वरूप को धारण करती हूँ और बड़े प्यार से अपने हाथों में भोग की थाली उठाकर, अपने प्यारे बापदादा को भोग स्वीकार कराने उनके अव्यक्त वतन की ओर चल पड़ती हूँ*। सेकण्ड में सूर्य, चांद, तारागणों के विशाल समूह को पार कर मैं भोग की थाली के साथ पहुँच जाती हूँ सफेद प्रकाश की, फरिश्तो से सजी दुनिया में। अपने सामने अव्यक्त बापदादा को देखते हुए मैं उनके पास पहुँचती हूँ और भोग की थाली उनके आगे रख उन्हें भोग स्वीकार कराती हूँ।

➳ _ ➳ बापदादा बड़े प्यार से मुस्कराते हुए कभी मुझे और कभी भोग की उस थाली को देख रहें हैं। *बाबा की याद में बने उस भोग में मेरी भावना को देख बापदादा हर्षित होते हुए अपनी दृष्टि उस भोग के ऊपर डाल उसमें अपनी सारी शक्तियाँ प्रवाहित कर रहें हैं*। बापदादा की दृष्टि से आ रही सर्वशक्तियाँ मुझ फ़रिश्ते पर भी पड़ रही है और मुझ से होती हुई उस भोग में समा रही है। पवित्रता की सारी शक्ति भोजन में समाती जा रही है। भोजन के एक - एक कण में अथाह शक्तियाँ भर गई हैं। *बड़े प्यार से अपने हाथ से मैं बाबा को भोग खिला रही हूँ। बाबा एकटक मुझे निहार रहें हैं और मेरे हाथ से भोग स्वीकार कर अब अपने हाथ से मेरे मुख में छोटी सी गिटी डाल रहें हैं*। बाबा को भोग स्वीकार कराकर अब मैं वापिस आती हूँ।

➳ _ ➳ साकार लोक में अपने साकारी तन में अब मैं विराजमान हो जाती हूँ। अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित होकर, अलग - अलग सम्बन्धों के रूप में बाबा को अनुभव करते हुए बाबा के साथ बैठ कर अब मैं उस भोग को खाती हूँ। *कभी मैं अनुभव करती हूँ बाबा मेरे सामने मेरा छोटा सा नन्हा सा बच्चा बन कर बैठें हैं और मैं बड़े प्यार से, उन पर बलिहार जाते हुए अपने हाथ से छोटी - छोटी गिटी तोड़ कर उन्हें खिला रही हूँ। एक गिटी मैं उन्हें खिलाती हूँ और फिर एक गिटी अपने नन्हे हाथों से वो मुझे खिलाते हैं*। कभी मैं उन्हें अपने खदा दोस्त के रूप में देखती हूँ। मेरा सबसे अच्छा दोस्त जो मेरे लिए

सब कुछ करने को तैयार हैं उसके ऐसे निस्वार्थ प्यार को देख खुशी में गदगद होकर मैं उसके साथ बैठकर भोजन खा रही हूँ।

➳ _ ➳ कभी अपने अविनाशी साजन के रूप में, अपने जीवन के हर सुख - दुख में साथ निभाने वाला सच्चा साथी अनुभव करते हुए उनके साथ बड़े प्यार से भोजन खा रही हूँ। *इस प्रकार हर दिन बड़े प्यार से बहुत शुद्धि से भोजन बनाकर, सर्व सम्बन्धो से बाबा को याद कर उनके साथ बैठकर खाने का भरपूर आनन्द लेते हुए, अपने ब्राह्मण जीवन मे मैं हर पल परमात्म प्यार और परमात्म पालना का अनुभव कर रही हूँ।

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं सर्व खजानों की अधिकारी बन स्वयं को भरपूर अनुभव करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं मास्टर दाता आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा अपनी स्थिति सदा अचल अडोल बनाती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा अन्तिम विनाश की सीन को देख सकती हूँ ।*
✺ *मैं शिव शक्ति हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ यह सर्व प्राप्ति भी महादानी बन औरों को दान करने के बजाए स्वयं स्वीकार कर लेते हैं। तो 'मैं और मेरा' शुद्ध भाव की सोने की जंजीर बन जाती है। भाव और शब्द बहुत शुद्ध होते हैं कि हम अपने प्रति नहीं कहते, सेवा के प्रति कहते हैं। *मैं अपने को नहीं कहती कि मैं योग्य टीचर हूँ लेकिन लोग मेरी मांगनी करते हैं। जिज्ञासु कहते हैं कि आप ही सेवा करो। मैं तो न्यारी हूँ लेकिन दूसरे मुझे प्यारा बनाते हैं। इसको क्या कहा जायेगा? बाप को देखा वा आपको देखा? आपका ज्ञान अच्छा लगता है, आपके सेवा का तरीका अच्छा लगता है, तो बाप कहाँ गया? बाप को परमधाम निवासी बना दिया! इस भाग्य का भी त्याग।* जो आप दिखाई न दें, बाप ही दिखाई दे। महान आत्मा प्रेमी नहीं बनाओ 'परमात्म प्रेमी बनाओ'। इसको कहा जाता है और प्रवृत्ति पार कर इस लास्ट प्रवृत्ति में सर्वांश त्यागी नहीं बनते। यह शुद्ध प्रवृत्ति का अंश रह गया। तो महात्यागी तो बने लेकिन सर्वस्व त्यागी नहीं बने। तो सुना दूसरे नम्बर का महात्यागी।

✺ *"ड्रिल :- आत्माओं को "महान आत्मा प्रेमी" बनाने की बजाये "परमात्मा प्रेमी" बनाना"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा एक ऐसे स्थान पर हूं जहां चारों तरफ रंग-बिरंगे फूल खिल रहे हैं और मैं फूलों के बीच भागती जा रही हूँ... और फूलों की खुशबू को अपने अन्तर्मन तक महसूस कर रही हूं... *जैसे-जैसे उन फूलों की खुशबू को मैं अपने अंदर फील करती हूं... वैसे-वैसे मेरा मन भी फलों की तरह खिल रहा है

और मैं देखती हूं कि मैं अपने आप को बहुत ही तेज खुशबूदार फूल अनुभव करती हूं... और मैं अपने इस अनुभव को सबसे श्रेष्ठ अनुभव समझने लगती हूं...* बाकी सभी फूल मुझे अपने से कम खुशबू वाले प्रतीत होते हैं मुझे लगता है की मैं खुशबू से भरी हुई हूँ और बाकी सभी फूलों की रंगत मुझसे कम है...

➳ _ ➳ तभी मैं खुशबू बनकर ऊपर उठने लगती हूं और पहुंच जाती हूं सूक्ष्म वतन जहां फरिश्ते ही फरिश्ते बैठे हुए हैं... वैसे ही मैं खुशबू से एक फरिश्ते का स्वरुप ले लेती हूं और अपनी चमक दूर-दूर तक अनुभव करती हूँ... तभी मैं देखती हूं कि वहां पर मेरे मीठे बाबा ने दरबार लगाया हुआ है और हमें समझा रहे हैं... बाबा ने सभी फरिश्तों को बताया कि आप सब योग्य टीचर हो आपको मुख्य भूमिका अदा करनी है... *जब कभी भी आप टीचर बनकर शिक्षा दे रहे होते हैं... उस समय आपको सभी कहते हैं कि आप बहुत अच्छा समझाते हो तो आप बहुत प्रसन्न होते हो...*

➳ _ ➳ और *जब आप प्रसन्न होते हो तो उस समय आपको यह आभास नहीं होता कि आपने यह भाव अपने अंदर कुछ इस तरह संभाल लिया है कि आप में देहभान आने लगता है... जब सिर्फ आपका ही वर्णन होता है और कहा जाता है कि आपकी यह सेवा हमें बहुत प्रभावित करती है... अगर आप हमें यह सेवा नहीं देंगे तो हम आगे नहीं बढ़ पाएंगे... उस समय आप यह अनुभव करते हो जी हां यह सेवा मैं बहुत अच्छी कर रही हूं... उस समय बाप कहीं भी आपके दिमाग में नहीं होते हैं... सिर्फ आपको अपनी सेवा की महानता के बारे में ही अनुभव होता है...* उस समय वह सभी आत्माएं सिर्फ आप की महानता के प्रेमी बन जाते हैं... तभी एक फरिश्ता उठ कर अपने पंख फैलाकर उड़ता हुआ बाबा को कहता है मेरे मीठे, बाबा मैं ऐसी सेवा नहीं करूंगा, जिससे वह मेरी महानता के प्रेमी बने...

➳ _ ➳ और बाबा को यह शब्द कहकर वह फरिश्ता बाबा के सामने बैठ जाता है... और बाबा उस पर अपना हाथ रखकर उसे वरदान देते हैं, सफलता मूरत भव... *मैं बाबा से कहती हूं, बाबा मैं हमेशा आपकी कही हुई बातों को स्मृति में रखूंगी और सभी आत्माओं को परमात्मा प्रेमी बनाऊंगी...* मैं अचानक अपने इस फरिश्ते स्वरूप से खशब फैलाते हए नीचे आ जाती हं... जहां चारों

तरफ फूलों की खुशबू बिखर रही है... और फूलों से यह वातावरण बहुत सुंदर लग रहा है और इस खुशबूदार वातावरण से अब मैं वापस अपने कर्म स्थल पर आ जाती हूं और अपनी सेवा प्रारंभ करती हूं...

➳ _ ➳ मैं जैसे ही अपनी सेवा आरंभ करती हूं... तो मेरे सामने अनेक आत्माएं बैठी हुई रहती हैं और मैं उनको बाबा की मुरली सुनाने लगती हूँ... उस दौरान सभी बहने मुझे कहती हैं... बहन आप बहुत अच्छी मुरली सुनाते हो... मैं उनसे कहती हूं उसी समय मैं बाबा का धन्यवाद करती हूं और मै बहनों को यह समझाती हूँ कि यह मुरली सिर्फ और सिर्फ परमात्मा द्वारा दिया हुआ हम सभी के लिए श्रीमत रूपी वरदान है... यह सुनकर सभी बहने बाबा का धन्यवाद करती है और सभी इसी भाव से ज्ञान सुनते हैं कि यह ज्ञान हमें परमात्मा सुना रहे हैं... *जो आत्माएं पहले मेरी महानता का गुणगान करती थी वह सभी आत्माएं अब परमात्मा प्रेमी बन गए हैं... सभी आत्माएं परमात्मा की श्रीमत पर चल रही है और मैं भी अपनी महानता को त्याग परमात्मा प्रेमी स्थिति का आनंद ले रही हूं...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔